25/4/2020

डा० दिनेश सिंह यादव (बी०एड० विभाग - असि०प्रोफेसर)
बी० एड० द्वितीय वर्ष (2018 - 2020)

पेपर - ज्ञान एवं पाठ्यक्रम
(Knowledge and Curriculum)

ज्ञान का अर्थ :-
(Meaning of Knowledge)

ज्ञान शब्द 'ज्ञ' धातु से बना है। जिसका अर्थ होता है "जानना", "बोध" "साक्षात अनुभव" आदि से माना गया। अर्थात हम सरल शब्दों कह सकते हैं -

"किसी वस्तु अथवा विषय के स्वरूप का, जैसा वह है, वैसा ही अनुभव या बोध होना ज्ञान कहलाता है" यदि हम दूर से पानी दिखाई दे रहा है और निकट जाने पर हमें पानी ही प्राप्त होता है तो कहा जाएगा कि उक्त स्थान पानी होने का "वास्तविकता का ज्ञान" हुआ।

इसके विपरीत, निकट जाकर हमें पानी के स्थान पर रेत दिखाई दे जिससे प्यास नही बुझाई जा सकती है तो कहा जाएगा कि उक्त स्थान पर पानी होने का ज्ञान हुआ, वह गलत है। ज्ञान एक प्रकार की मनोदशा है, ज्ञाता के मन में पैदा होने वाली एक प्रकार की हलचल है। हमारे मन में अनेक विचार आते हैं और हमारी खूब सारी मान्यताएँ होती है, जो हमारे मन में हलचल उत्पन्न करती है।

(2)

ज्ञान की अवधारणा :-
(Concept of Knowledge)

प्लेटो के अनुसार "विचारों की दैवीय व्यवस्था और आत्मा-परमात्मा के स्वरूप को जानना ही सच्चा ज्ञान है"

प्लेटो की इस परिभाषा के आधार पर कुछ विद्वानों ने ज्ञान को मात्र अनुभव तक ही सीमित नहीं माना, क्योंकि अनुभव में कई संदेह, अस्पष्टता एवं अनिश्चितता घुली मिली रहती है। अनुभव में से ज्ञान को अलग करने के लिए उन्होंने कसौटियाँ बनाई जिन पर परखने के बाद अनुभव को ज्ञान रूप में स्वीकार किया जा सकता है। हम इसे निम्न तथ्यों द्वारा समझाने का प्रयत्न करेंगे :-

सामान्यतः हमें निरंतर अनुभव होते रहते हैं; क्योंकि हम चेतन हैं। ये अनुभव हमारी इन्द्रियों के माध्यम से होते हैं। जिनमें आँख, कान, नाक, जीभ और त्वचा सम्मिलित है।

इन्द्रियों के माध्यम से आए हुए ये अनुभव हमारे मन मस्तिष्क में आते हैं और वहाँ मन एवं मस्तिष्क द्वारा विश्लेषण एवं योगीकरण किया जाता है। इस तथ्य को एक उदाहरण द्वारा समझ सकते हैं। -

जैसे कि हम रसोई का सामान रसोईघर में, बैठक का सामान बैठक में और नहाने-धोने का सामान स्नानगृह

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

में वर्गीकरण करके व्यवस्थित कर देते है। परन्तु यह सब सामान हम बाजार से एक साथ ही लाते हैं। ठीक उसी तरह हमारे मन-मस्तिष्क में बहुत सारे अनुभव, इन्द्रियों के माध्यम से बाहर आते हैं और वे उन्हे व्यवस्थित कर देते हैं।

किन्तु मन-मस्तिष्क द्वारा ऐसा करने में कुछ नया घटित हो जाता है। इसका कारण है कि मन और मस्तिष्क की अपनी क्षमता होती है। इस प्रकार ज्ञान अनुभवों का संश्लेषणात्मक एवं विश्लेषणात्मक रूप होता है।

यथार्थ अनुभव प्राप्त करने के लिए भारतीय चिन्तन में विभिन्न साधनों की चर्चा की गई है। इनमें प्रमुख हैं - प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान एवं शब्द।

इन साधनों से प्राप्त ज्ञान को यथार्थ अनुभव या प्रमा (वैध) (Valid) कहा गया है। जबकि भिन्न साधनों से प्राप्त ज्ञान को अप्रमा (अवैध) (Invalid) अथवा अयथार्थ कहा गया है। स्मृति, संशय आदि से प्राप्त ज्ञान वास्तविक नहीं है।

प्रत्यक्ष शब्द का अर्थ जिसका हमें देखने, सूंघने, चखने, सुनने व स्पर्श से अनुभव हो। अनुमान का अर्थ है कि जब दो वस्तुओं को किसी नित्य सबंध या अनिवार्य सम्बंध के अन्तर्गत देखते हैं तो एक के होने पर भी दूसरे का ज्ञान होना प्रत्यक्ष के कारण नहीं अपितु अनुमान के कारण होता है। जैसे- धुंआ देखकर आग लगने का अनुमान।

उपमान का अर्थ है कि किन्ही दो वस्तुओं के गुण, आकृति एवं प्रभाव आदि की समानता के आधार पर तुलना करने से

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

प्राप्त ज्ञान को उपमान कहते हैं। जैसे - चन्द्रमा की सुन्दरता देखकर चेहरे की सुन्दरता का ज्ञान तुलना करने से प्राप्त होता है।

वाक्य या यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने का चौथा साधन शब्द है। इसका अर्थ है विश्वसनीय एवं विशेषज्ञ व्यक्तियों के कथनों से प्राप्त ज्ञान। इसको हम निम्न उदाहरण से समझ सकते हैं:- दुनिया में जापान देश है, इसका ज्ञान यदि प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान से न हो, परन्तु शब्द से अर्थात विश्वसनीय व्यक्ति के कथन से हो तो इसका ज्ञान हो सकता है। इस तरह के ज्ञान को शब्द-ज्ञान कहा जाता है।

ज्ञान की परिभाषाएँ
(Definitions of knowledge)

शंकर के अनुसार "ब्रह्म को सत्य जानना ज्ञान है और वस्तु जगत की सत्य जानना अज्ञान है"

स्पेन्सर के अनुसार "केवल वस्तु जगत का ज्ञान ही सत्य ज्ञान है, आत्मा-परमात्मा सम्बन्धी ज्ञान कोरी कल्पना है।"

प्रो० रसेल के अनुसार "ज्ञान वह जो मनुष्य के मन को प्रकाशित करता है।"

सुकरात के अनुसार "ज्ञान सर्वोच्च सद्गुण है।"

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

यथार्थवादी दर्शन के अनुसार "ज्ञान, वस्तु का ज्ञान है।"

आदर्शवादी दर्शन के अनुसार "ज्ञान आदर्श का ज्ञान है।"

उपरोक्त परिभाषाओं के अध्ययन से ज्ञान के सम्बन्ध में तीन तथ्य(fact) उजागर होते हैं:-

① ज्ञान वह है जो सत्य है।
② ज्ञान में ज्ञाता का विश्वास होता है।
③ ज्ञाता के पास उस ज्ञान के सत्य होने का प्रमाण होता है।

ज्ञान की प्रकृति
(Nature of knowledge)

ज्ञान की प्रकृति का प्रत्यक्ष सम्बन्ध यथार्थ से है। ज्ञान के द्वारा वस्तु के उस यथार्थ स्वरूप को जाना जाता है, जिस स्वरूप में वह है। ज्ञान के द्वारा ही व्यक्ति में चेतना का प्रकाश उत्पन्न होता है; ज्ञान प्रकृति प्रदत्त है।

जब व्यक्ति में ज्ञान का स्वरूप सत्वगुण पर निर्भर होता है तो ज्ञान का स्वरूप सात्विक होता है। और जब तमोगुणों की प्रधानता हो जाती है तब ज्ञान तामसिक हो जाता है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

संक्षिप्त रूप में ज्ञान की प्रकृति निम्नलिखित है।

(1) ज्ञान में शामिल है।
(2) ज्ञान सत्य तक पहुँचने का साधन है।
(3) ज्ञान कभी समाप्त नहीं होता है।
(4) ज्ञान उस धन की तरह होता है जिसे जितना प्राप्त होता है, वह उतना ही ज्यादा पाने की इच्छा रखता है।
(5) ज्ञान अचानक न बढ़कर क्रमबद्ध तरीके से बढ़ता है।
(6) ज्ञान प्रेम तथा मानव स्वतन्त्रता के सिद्धान्तों का आधार है।
(7) ज्ञान सुनिश्चित है।
(8) ज्ञान की कोई सीमा नहीं होती है।
(9) तथ्य तथा मूल्य ज्ञान के आधार माने जाते हैं।
(10) ज्ञान की पुष्टि की जा सकती है।
(11) सूचना ज्ञान का स्रोत है।

ज्ञान शब्द का प्रयोग

Use of 'term' knowledge' सामान्यतः ज्ञान शब्द का प्रयोग मुख्य रूप से तीन अर्थों में होता है। जो निम्न है :-

(1) परिचय — जब हम किसी व्यक्ति के परिचय की जानकारी रखते हैं तो माना कि हम उस व्यक्ति के बारे में थोड़ा-बहुत ज्ञान रखते हैं। परन्तु केवल परिचय करने मात्र से सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त नहीं होता है। सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने के लिए अन्य स्रोतों से ज्ञान

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

लेकर (जानकारी लेकर) उसके बारे में सम्पूर्ण ज्ञान (जानकारी) प्राप्त की जा सकती है।

(2) कार्य करने की योग्यता :- ज्ञान व जानने शब्द का प्रयोग कार्य करने व सीखने की योग्यता पर निर्भर करता है। योग्यता से तात्पर्य है - किसी कार्य करने की कुशलता से।

(3) प्रतिलब्धि ज्ञान :- यह अर्थ दर्शनशास्त्र के क्षेत्र में महत्व रखता है। जैसे कि हम सब यह कहते है कि हम जानते हैं या जानकारी रखते हैं, तो इसका अर्थ यह हुआ कि हम किसी बात का ज्ञान रखते हैं। जैसे - मैं गाना जानता हूँ।

ज्ञान का महत्व
(Importance of knowledge)

मानव जीवन में ज्ञान रीढ़ की हड्डी की तरह कार्य करता है। इसलिए ज्ञान का महत्व बढ़ गया है। जो हम निम्न बिन्दुओं के द्वारा व्यक्त कर सकते हैं :-

(1) ज्ञान मनुष्य की तीसरी आँख के रूप में कार्य करता है।
(2) मानव जीवन सार ज्ञान है।
(3) ज्ञान से बढ़कर सृष्टि में कोई सुख नहीं है।
(4) ज्ञान वह गुरु है जो मनुष्य को अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाता है।
(5) ज्ञान प्रकाश के सूर्य के समान दूसरों का कल्याण करता है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

(6) ज्ञान विश्व के रहस्यों को खोज कर उसे उजागर करता है।
(7) ज्ञान चरित्र निर्माण का सूचक है।
(8) ज्ञान सत्य तक पहुँचने का सर्वोत्तम साधन है।
(9) ज्ञान में क्रमबद्ध चलता है आकस्मिक नहीं।
(10) ज्ञान शाश्वत है।
(11) धर्म की तरह ज्ञान को भी जानने के लिए अनुभव करने चाहिए।
(12) ज्ञान प्रेम व मानव स्वतन्त्रता के सिद्धान्तों का आधार है।
(13) तथ्य (सत्य) मूल्य, ज्ञान के आधार के रूप में कार्य करते हैं।
(14) ज्ञान की सीमाएँ निश्चित नहीं हैं।
(15) ज्ञान समय का परिणाम है।
(16) ज्ञान चेतना है, जिससे मनुष्य का मनोबल एवं आत्मविश्वास बढ़ता है।
(17) ज्ञान शिक्षा प्राप्ति का सर्वोत्तम साधन है।
(18) ज्ञान मस्तिष्क की खुराक है।
(19) ज्ञान से भौतिक जगत व आध्यात्मिक जगत को समझने में मदद मिलता है।
(20) विश्व महान दार्शनिकों का मत है- "ज्ञान अपने आप को जानने का सशक्त साधन है, ज्ञान सद्गुण है व अज्ञान पाप है।"

डा० दिनेश सिंह यादव (बी०एड० विभाग- एसो०प्रोफेसर)
पेपर- ज्ञान एवं पाठ्यक्रम
बी०एड० द्वितीय वर्ष - 2018-2020
25/04/2020

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner